RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण : KANPUR HO/002/2025-27
प्रधान डाकघर कानपुर-डाक प्रेषण दिनांक 29/30

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

www.dbindia.org.in

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

मार्च–2026 | वर्ष – 18 | अंक : 02 | मूल्य : 5/-

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सम्पादकीय

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : उमेश्वरी देवी, मो.: 9005204074
संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (जलकल विभाग), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), मनीष कुमार मो. 9415053621
राज्य ब्यूरो प्रमुख उत्तर प्रदेश :
सुनील कुमार, ढेलवा, गाजीपुर (उ.प्र.), मो.: 9935363730, 9170836363
योगेन्द्र कुमार (ब्यूरो चीफ चित्रकूट मण्डल) मो.: 8299162841
हमीरपुर ब्यूरो प्रमुख – रघुवर प्रसाद, मो.: 9793739030
क्षेत्रीय सम्पादकीय कार्यालय :
40/69, डी–5, श्यामलाल का हाता, परेड, कानपुर (उ.प्र.), मो. : 8756157631
ब्यूरो प्रमुख लखनऊ मण्डल :
राजकुमार, उन्नाव
मो.: 9889273743, 9392660070
हरियाणा राज्य :
डा. रमेश रंगा, ग्राम–सराय, औरंगाबाद, पो.–बहादुरगढ़,जिला–झज्जर (हरियाणा),09416347052
कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू.के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर
मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार
कार्यालय : ग्रा. व पो.–रामटौरिया, जिला–छतरपुर
छत्तीसगढ़ राज्य : ब्यूरो प्रमुख
रमा गजभिये, मो.: 7828273934
दिल्ली प्रदेश : C/o अनिल कुमार कनौजिया C-260, हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट–III, बदरपुर, नई दिल्ली–44, मो. : 09540552317
राजस्थान राज्य : रघुनाथ बौद्ध, श्याम रघु फुट वियर, दुकान नं.–1, गणेश मार्केट, पुलिस चौकी के सामने, अलवर, जिला–अलवर–301001, मो. : 09887512360, 0144–3201516
बाबूलाल बौद्ध, अलवर, मो.–08058198233
संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला–महोबा (उ.प्र.)
मो. : 9005204074, 8756157631
E-mail : dravinbharat1@gmail.com
प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. व पो.–रिवई (सुनैचा), जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि., 109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, बी, फजलगंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

मिशन को बढ़ाने के लिए सहयोग करें –
भारतीय स्टेट बैंक
पी.पी.एन. मार्केट, कानपुर
खाता सं.–33496621020
IFSC CODE-SBIN0001784

क्या 'बुद्ध' का 'कर्म' का सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त के समान ही हैं?

1. बुद्धधर्म का कोई भी दूसरा ऐसा सिद्धान्त नहीं है जिसने इतनी 'गलतफहमी' पैदा की हो, जितनी इस 'कर्म' के सिद्धान्त ने।

2. बुद्धधर्म में 'कर्म' का क्या स्थान है और क्या वास्तविक महत्व है?

3. अज्ञ हिन्दू बेसमझी के ही कारण केवल शब्दों की समानता की ओर देखकर कहते हैं कि ब्राह्मणवाद वा हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म एक ही है।

4. ब्राह्मणों का पढ़ा–लिखा और कट्टर वर्ग भी यही कहता है। वह अज्ञ जनता को गलत रास्ते पर चलने के लिये जान–बूझकर कहता है।

5. पढ़े–लिखे ब्राह्मण भली प्रकार जानते हैं कि बुद्ध का 'कर्म' का सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त से सर्वथा भिन्न है। लेकिन तब भी वे यही कहे जाते हैं कि बुद्ध–धर्म वही है जो ब्राह्मणवाद या हिन्दु–धर्म है।

6. शब्दों की समानता के कारण उनको अपना झूठा तथा दुष्ट प्रचार करने में आसानी हो जाती है।

7. इसलिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि स्थिति की पूर्ण परीक्षा की जाय।

8. भगवान बुद्ध का 'कर्म' का सिद्धान्त–शाब्दिक समानता कितनी ही हो अपने अर्थ में ब्राह्मणी 'कर्म' के सिद्धान्त के समान हो नहीं सकता।

9. दोनों की मूल स्थापनायें एक दूसरे से परस्पर इतनी अधिक भिन्न है कि परिणाम एक ही हो सकता। दोनों के दो भिन्न परिणाम होने ही चाहिये।

10. सुविधा के लिये हिन्दु 'कर्म' की मान्यताओं को क्रमशः इस प्रकार गिना जा सकता है

11. हिन्दु 'कर्म' का सिद्धान्त 'आत्मा' की मान्यता पर निर्भर करता है। बौद्ध नहीं। क्योंकि बौद्धधर्म में तो 'आत्मा' है ही नहीं।

12. ब्राह्मणी 'कर्म' का सिद्धान्त वंशानुगत है।

13. यह एक जन्म से दूसरे जन्म तक चलता रहता है। यह इसलिये क्योंकि 'आत्मा' का संसरण होता है।

14. 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त के बारे में यह बात सत्य नहीं है। यह भी इसीलिये कि बौद्धधर्म में 'आत्मा' नहीं है।

15. 'कर्म' का हिन्दु–सिद्धान्त शरीर से पृथक एक 'आत्मा' पर आधारित है। शरीर मरता है, तो 'आत्मा' उसके साथ नहीं मरता। 'आत्मा' फुरे से उड़ जाता है।

16. 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त के बारे में यह बात भी सच नहीं है।

17. 'कर्म' के हिन्दु–सिद्धान्त के अनुसार जब आदमी कोई कर्म करता है तो उसके 'कर्म' के दो परिणाम होते हैं। एक तो उस 'कर्म' से वह करने वाला प्रभावित होता है, दूसरे उस 'कर्म' का उसके 'आत्मा' पर प्रभाव पड़ता है।

18. वह जो भी 'कर्म' करता है, उसके 'आत्मा' पर उसका प्रभाव पड़ता ही है।

19. जब आदमी मरता है और जब 'आत्मा' उसका शरीर छोड़ कर निकल भागती है (या निकल भागता है) तो 'आत्मा' उन संस्कारों से संस्कृत रहता है।

20. यह संस्कार ही है जो उसके भावी जन्म और स्थिति का निर्णय करते हैं।

21. हिन्दु 'आत्मवाद' का बौद्ध 'अनात्मवाद' से कुछ भी मेल नहीं।

22. इन कारणों से 'कर्म' का बौद्ध–सिद्धान्त और 'कर्म' का हिन्दु–सिद्धान्त न एक है और न एक हो सकता है।

23. इसलिये 'कर्म' के बौद्ध–सिद्धान्त और 'कर्म' के ब्राह्मणी–सिद्धान्त को एक ही बताना महज मूर्खता है।

24. अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि इस शाब्दिक माया–जाल से सावधान रहना चाहिये।

साभार :
भगवान बुद्ध और उनका धर्म
पेज संख्या 267 से 268 तक
डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

बहुजन नायक मान्यवर कांशीराम जी के कुछ प्रेरक विचार ....

तमन्ना सच्ची है, तो रास्ते मिल जाते हैं। तमन्ना झूठी है, तो बहाने मिल जाते हैं।। जिसकी जरूरत है रास्ते उसी को खोजने होंगे। निर्धनों का धन उनका अपना संगठन है।

चाहने वालों की चाहत को पूरा करने के लिए, चाहने वालों को ही साधन खोजने होंगे। छोटे साधन को बड़े पैमाने पर इस्तेमाल करके बड़े से बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

बहुजन समाज पार्टी बनाना आसान काम है, परन्तु बहुजन समाज बनाना मुश्किल काम है। मैं इस मुश्किल काम को अंजाम देने में लगा हूँ, मैंने मांगने वाले लोगों में देने की आदत डाल दी है।

अकेले एक जाति का संगठन बनाकर, उस जाति के हितों की सुरक्षा नहीं की जा सकती बल्कि छः हजार जातियों में तोड़े गये लोगों को जोड़कर भाईचारा पैदा करके बहुजन समाज बनाकर सभी जातियों के हितों की रक्षा की जा सकती है।

15 मार्च
मान्य. कांशीराम के जन्म दिन के महान अवसर पर उन्हे
हार्दिक श्रृद्धांजलि

उमेश्वरी देवी
सम्पादक – द्रविड़ भारत

मा. रामदीन अहिरवार
पूर्व ग्राम प्रधान/पूर्व जेल विजिटर
उ.प्र. शासन

1 मार्च उल्लास दिवस (रावण जयन्ती) पर विशेष

अगर रावण दुष्ट और क्रूर था तो देवता उसकी पूजा क्यों करते थे ?

जो रावण वेदज्ञ और यज्ञ का अुनष्ठाता था, जिसे वाल्मीकि ने महात्मा कहा है और जिस की प्रजा में वेदों और यज्ञादि का पर्याप्त प्रचार था, उसे दुष्ट और नीच क्यों समझा जाता है?

राम कथाकारों द्वारा रावण जैसे पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी के असंगत चित्रण के मूल में क्या आर्य अनार्य के भेदभाव और मनोमालिन्य की प्रवृत्ति नहीं है ?

रावण दुष्ट था या महात्मा ?

लंकेश्वर रावण पुण्यात्मा और महापुरूष था। रामायण में वाल्मीकि ने उसे 'महात्मा' कहा है। जो लोग रावण को रामलीला में अपमानजनक विशेषणों से स्मरण करते हैं वे वास्तव में रावण के चरित्र को नहीं जानते. जिसे वाल्मीकि ने 'महात्मा' कहा, उसे 'नीच' और 'दुष्ट' कहना केवल दुराग्रह है। जो लोग अज्ञान के कारण पक्षपातपूर्ण दृष्टि से रावण की निंदा करते हैं, वे वाल्मीकि रामायण में सुंदरकांड के ये श्लोक पढ़े :

महात्मनो महद्वेश्म् महारत्न परिच्छद्म।
महारत्न समाकीर्ण ददर्श स. महाकपिः।
–वाल्मीकि रामायण, 6/13–14
सर्व कामैरुतांच पानभूमिं महातमनः
–वाल्मीकि रामायण, 11/12

प्रातःकाल का सुहावना समय है, हनुमान सीता जी की खोज में व्यस्त है। महावीर ने हर राक्षस के घर वेदमंत्रों की ध्वनि सुनीः

षंडगवेदविदुषां क्रतुप्रवरयाजिनाम्।
शुश्राव ब्रह्मघोषंश्च विरात्रे ब्रह्मरक्षसाम्।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/12

रावण के महलों में कभी कोई नीच काम नहीं किया जाता था, सदा वेद प्रतिपादित काम किए जाते थे. इसलिए वे देवता, जिन्हें लोग पूजते हैं, रावण के घर को पूजते थे। देखिए :

गृहाणि नानावसुराजतिानि देवासरैश्चापि सुपूजितानि।
सर्वेश्च दोषैः परिवर्जितानि कपिर्ददर्श स्वबलार्जितानि।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 18/127/3

यदि कोई यह कहे कि देवता, रावण को महान होने के कारण नहीं बल्कि भयभीत हो कर पूजते थे, क्योंकि रावण ने अपने अपने बल से देवताओं को जीत लिया था, तो यह जान लेना चाहिए कि ऐसा करने से देवों की दुर्बलता और कायरता ही प्रकट होती है. जो देवता रावण के भय से उस की पूजा करते थे, ये देवता कैसे ! लोग देवताओं से आशा करते हैं कि उन्हें वे दुष्टो से बचाएं। पर जब रावण से थरथर कांपते थे और उस की पूजा करते थे, तब भजा वे दुष्टों से कैसे बचा सकते हें ?

वास्तव में बात यह है कि रावण के चरित्र की श्रेष्ठता और उस के पवित्र आचरण तथा महान कार्यों को देख कर ही देवता उस की पूजा करते थे।

लंका को देख कर हनुमान ने आश्चर्य से कहा :

स्वर्गोऽय देवलोकाऽयमिंद्रस्येयं पुरी भवते।
सिद्धिर्वेयं पराहि स्यादित्मन्यत मारुतीः।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/31

यदि रावण निर्दयी या दुष्ट होता तो उस के समकालीन हनुमान उस के पाप आचरण से परिचित होते। यदि परिचित थे तो फिर निर्दयी दुष्ट राजा की नगरी को उन्होने स्वर्ग, देवलोक व इंद्रलोक क्यों कहा ? जाहिर है कि रावण एक कुशल प्रशासक था। तभी हनुमान ने उस की राजधानी की भरपूर प्रशंसा की।

रावण के आचरण पर सीताहरण का कलंक लगाया जाता है। रावण ने सीता का हरण किया, यह सच है। पर सीता हरण के समय उस के मन में काम वासना नहीं थी। उस ने काम वासना से नहीं बल्कि बदला लेने की भावना से सीताहरण किया था।

रावण ने राम वनवास के चौदहवें वर्ष के आरंभ में सीताहरण किया और वह भी बहन के नाक कान कट जाने के बाद। यदि सीताहरण में रावण की काम वासना मूल कारण थी तो वह पहले तेरह वर्ष कहां रही ? क्या वृहन्नला (अर्जुन) के समान रावण को भी नपुंकस रहने का शाप मिला था ? स्पष्ट है कि सीताहरण का मूल कारण बदले की भावना थी, काम वासना नहीं।

रावण संयमी और सदाचारी था, कामी नहीं। वाल्मीकि कहते हैं :

न तत्र काश्चित्प्रमदाः प्रसह्य वीर्योपपन्नेन गुणेन लब्धाः।
न चान्यकामापि न चान्यपूर्ण बिना बराहाँ जनकात्मजांताम्।
–वाल्मीकि रामायण, सुदंरकांड, 9/10

रावण के महलो में अन्यकामा (और को चाहने वाली) कन्या तथा अन्यपूर्वा (विवाहित) स्त्री न थी। यदि वह चाहता तो बलपूर्वक अन्यकामा कन्याओं को तथा अन्यपूर्वा स्त्रियों को अपने महलों में रख सकता था। लेकिन इसे वह अनुचित समझता था। वह पापभीरु था। यदि उस ने कभी परस्त्री की आरे आंख उठाई होती तो वाल्मीकि उसे सदाचार का प्रशंसापत्र ने देते। उत्तरकांड़ वाली कथा कपोलकल्पित है।

उत्तकांड वाल्मीकि ने नहीं लिखा था। यदि उन्होंने लिखा होता तो क्या वह रावण द्वारा वेदवती पर किए गए अत्याचार से परिचित न थे ! यदि थे तो उन्होंने रावण को प्रशंसापत्र क्यों दिया ? अतः उत्तरकांड वाल्मीकि कृत नहीं है, बल्कि बाद में किसी ने जोड़ दिया है।

देखना यह है कि पहल किस ने की– राम ने या रावण ने। पहले राम ने शूर्पणखा के नाक कान काटवा दिए, फिर रावण ने सीताहरण किया। पहले राम ने हाथ उठाया, फिर रावण ने। आप कहेंगे की शूर्पणखा भगवान राम के पास गई और उन्हें तंग करने लगी, इसीलिए उन्होंने नाक कान काट दिए।

यह माना जा सकता है कि शूर्पणखा ने राम विवाह के लिए प्रार्थना की, जो सर्वथा न्यायासंगत थी। उत्तर में राम ने विवाहित होने के कारण अपनी विवश्ता प्रकट कर के कहा कि लक्ष्मण अविवाहित है, उस के पास जाओं, पर लक्ष्मण ने उसे राम के पास भेज दिया। और राम ने फिर लक्ष्मण के पास। इस तरह वे दोनों वीर एक स्त्री का उपहास करते रहे।

क्या यह सत्य है कि लक्ष्मण अविवाहित थे? यदि नहीं तो राम ने एक स्त्री से झूठ बोलने में संकोच क्यों नहीं किया। राम ने यह जानते हुए भी कि लक्ष्मण विवाहित हैं। शूर्पणखा को उस के पास क्यों भेजा। मर्यादा पुरुषोत्तम की महानता इस में थी कि वह शूर्पणखा से स्पष्ट कह देते कि हम दोनों भाई विवाहित हैं। हम विवाह नहीं करेंगे। आप चली जाएं। किंतु उन्होंने सचाई को छिपा कर एक स्त्री से अनुचित उपहास किया। फिर राम ने संकेत कर के लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक कान कटवा दिए।

यदि कोई कहे कि शूर्पणखा सीता को खाने दौड़ी थी, इसलिए राम ने उस के कान नाक कटवा लिए, तो हम पूछते हैं कि इस से पहले शूर्पणखा ने कितने स्त्रीपुरुषों को खाया था ? क्या इस का रामायण में कहीं उल्लेख है। यदि नहीं तो राम को यह भय क्यों व्यापा. क्या लक्ष्मण द्वारा नाक कान कटवाने के अतिरिक्त राम का सीता के बचाव का और कोई उपाय न सूझा। क्या नाक कान कट जाने पर शूर्पणखा सीता को नहीं खा सकती थी।

कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बड़ी सुगमता से इस परिणाम पर पहुंच सकता है कि शूर्पणखा सीता को खाना नहीं चाहती थी। उस ने केवल धमकी दी थी। आजकल भी लोग एक दूसरे को कच्चा खाने की धमकी देते हैं। मगर आज तक किसी ने किसी को कच्चा खाते नहीं देखा।

शूर्पणखा के नाक कान काट कर राम ने रावण का भारी अपमान किया, जिसे वह सह न सका और उस ने राम को अपमानित करने की ठान ली। क्योंकि राम ने उस की अबला बहन पर अपना शौर्य दिखा कर रावण का अपमान किया था, इसलिए रावण ने भी 'शठे शाठ्यं समाचरेत' की नीति अपनाई। बदले में उस ने उन की पत्नी का हरण कर के उन का अपमान किया।

इसमें संदेह नहीं कि 'वाल्मीकि रामायण' में कई जगह रावण के लिए 'दुरात्मा' शब्द का प्रयोग किया गया है और दो एक स्थलों पर तो महात्मा के साथ घृणित विशेषण भी प्रयुक्त किए गए हैं। इन का उल्लेख आगे किया जाएगा।

एक पुस्तक में एक ही पुरूष के संबंध में परस्पर विरोधी विशेषणों का प्रयोग आश्चर्यजनक है। स्मृतियों में भी परस्पर विरोधी बातें मिलती हैं, परंतु उन का समाधान भी उन्हीं में मौजूद होता है। स्मृति और इतिहास की परस्पर विरोधी बातों में जमीन आसमान का अंतर है। स्मृति में परस्पर विरोधी बातों का समाधान होने के बावजूद उन की स्वतंत्र सत्ता भी रहती है। किंतु इतिहास में जहां एक व्यक्ति के संबंध में परस्पर विरुद्ध बातों का उल्लेख होगा, वहां समाधान में दोनों बातों में से एक बात को सर्वथा निर्मूल सिद्ध करना पड़ेगा।

शूर्पणखा नाक कान कट जाने पर रोती चिलाती रावण के दरबार में पहुंची। उस ने बीस भुजाओं वाले रावण को सिंहासन पर बैठे देखा :

विंशंदुंजं दशग्रीव दर्शनीयपरिच्छदम्
–वाल्मीकि रामायण,
अरण्यकांड, 32/8

परंतु सीता की खोज में लंका पहुंच कर हनुमान ने रावण को पलंग पर सोते देखा तो उस के एक मुख और दो भुजाएं थी :

तस्य राक्षससिंहस्य निश्चय क्रम महामुखात्।
–वाल्मीकि रामायण,
सुदंरकांड, 10/24
कांचनागंदसत्रद्धौ ददश स महात्मनः।
विक्षिरौ राक्षसेंद्रय भुजाविंद्र ध्वजोपमौ।
–वाल्मीकि रामायण,

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

सुदंरकांड, 10/12
संपाती वानरों को रावण की पहचान बताते हुए

मानते हों लेकिन बुद्धि की कसौटी पर रावण का यह रूप सर्वथा अवास्तिविक, अनैतिहासिक और एकांगी प्रतीत होता है।

ऐतिहासिक रूप से रामकथा से संबंधित सर्वप्रथम ग्रंथ वाल्मीकि रामायण है, जिस के अनुसार राक्षसों की तीन शाखाएं–विराध, दानव ओर राक्षस–प्रमुख थीं रावण तीसरी शाखा का नायक था। व्युत्पत्ति के आधार पर राक्षस 'रक्ष' धातु से बना है, जिस का अर्थ है रक्षा करने वालां वाल्मीकि के उत्तकांड (सर्ग 4–11) में आई एक कथा के अनुसार प्रजापति ब्रह्मा ने जलसृष्टि कर के उस की रक्षा के निमित्त प्राणियों की उत्पत्ति की। इन मे जो क्षुधापीड़ित थे, बोल उठे, 'रक्षामः' हम रक्षा करेंगे और क्षुधित नहीं थे, बोले 'यक्षामः' अर्थात् हम यज्ञ करेंगे। इस प्रकार रक्षक प्राणी 'राक्षस' और यज्ञ करने वाले प्राणी 'यक्ष' कहलाए।

रावण का पिता आर्य और माता अनार्य थी। इस प्रकार उस क शरीर में आर्य और अनार्य दोनों का मिश्रण था। उस के पिता जगत प्रसिद्ध विश्रवा ऋषि तथा माता सुमाली असुर की पुत्री कैकसी थी। सुमाली यक्षों से अपनी खोई लंका वापस लेना चाहता था। अपने षड्यंत्र को सफल बनाने के लिए उस ने अपनी पुत्री कैकसी को पुत्र प्राप्ति की कामना से विश्रवा ऋषि के पास भेजा। ऋषि की कृपा से कैकसी के कुंभकरण, रावण और विभिषण आदि पुत्र तथा शुर्पणखा पुत्री पैदा हुई। विश्रवा मुनि ने पहले रावण के संबंध में भविष्यवाणी कर दी थी। अतएव जन्म के समय ही रावण के दस विशाल सिर, चमकीले बाल, 20 भुजाएं और काले अंजन के सामन वर्ण था।

विश्रवा की भविष्यवाणी और रावण की भंयकर आकृति के कारण माता कैकसी प्रारंभ से ही उस से घृणा करने लगी। परिणामस्वरूप रावण प्रांरभ से ही हीनग्रंथि पड़ गई, जिस ने उस के महत्त्वाकांक्षी होने में बहुत सहायता दी। रावण के दस सिर और 20 भुजाओं का वर्णन वाल्मीकि रामायण में भी आया है। लेकिन एक तो यह वर्णन एकाध स्थल पर ही है (शायद प्रक्षिप्त अंश हो), दूसरे आधुनिक विद्वानों ने इस को प्रतीक मात्र ही माना है। वास्तव में अधिकांश बलवानों की भांति उस की गरदन बड़ी थी। अतएव वह 'दसग्रीव' अथवा एक ही गरदन में दस गरदनों का बल रखने वाला कहलाया।

दरअसल 'दशानन' या 'दशशीश' का भाव यह है कि उस ने दसों दिशाओं को जीता अथवा वह दस प्रकार के मुकुट या दस मणियों वाला किरीट धारण करता था। यदि नाम के आधार पर ही उस को दस सिर और 20 भुजाओं वाला माना जाए तो 'दशरथ' भी दशरथ वाला माना जाएगा। वास्तव में दस सिर और 20 आंखे और 20 भुजाएं उस की अप्रतिहत विजयों, सूक्ष्म दृष्टि और अद्वितीय वीरभाव के प्रतीक हैं। इस प्रकार रावण एक सिर और दो भुजाओं वाला मानव था, जैसा वाल्मीकि रामायण के हनुमान द्वारा लंका में रावणदर्शन, अशोक वाटिका तथा मंदोदरी विलाप आदि प्रसंगो से भी सिद्ध होता है. अनार्य होने के कारण उस का वर्ण अवश्य श्यामल था, जैसा कि आज उस जाति के लोगों में पाया जाता है।

ईसा से लगभग 38 शती पूर्व आंध्रालय (आस्ट्रेलिया) निवासी रावण, जो कि एक दुर्धर्ष वीर, अति महत्त्वाकांक्षी, प्रतापी, मेधावी और साहसी व्यक्ति था, अपने नाना सुमाली द्वारा प्रेरित हो कर अपने सौतेले भाई कुबेर से अपने नाना की सोने की लंका को मुक्त कर अपने अधिकार में करने के लिए लंका जा पहुंचा. पहले तो सीधे सादे कुबेर ने अपने इस सौतेल भाई का स्वागतसत्कार किया। लेकिन उस का मंतव्य ज्ञान होने पर अपने पिता के पास जा पहुंचा। पिता रावण की शक्ति से अच्छी तरह परिचित थे। इसलिए उनकी सलाह के अनुसार कुबेर ने लंका खाली कर दी और रावण ने उस पर अधिकार कर लिया।

यद्यपि लंका पहले से ही समृद्ध थी, लेकिन रावण के अधिकार में आते ही उस का यश वैभव दूरदूर तक फैल गया। महत्त्वाकांक्षी रावण इतने से ही संतुष्ट नही होसकता था, इसलिए शीघ्र ही उस ने अंगद्वीप (सुमात्रा), यवद्वीप (जावा), मलयद्वीप (मलाया), शंखद्वीप (बोर्नियो), कुशद्वीप (अफ्रीका), वराह द्वीप (मेडगास्कर) आदि दक्षिणवर्ती द्वीप समूहों पर भी विजय प्राप्त कर ली।

यह उस के अद्भुत शौर्य और पराक्रम का ही फल था कि शीघ्र ही उस ने देव, दानव, असुर, गंधर्व, यक्ष आदि तत्कालीन सभी प्रमुख जातियों पर प्रभुत्व स्थापित कर लिया। इस प्रकार रावण ने सर्वाधिक विस्तृत और शक्तिशली साम्राज्य की स्थापना की। इस संबंध में स्मरणीय यह है कि रावण से पूर्व कोई भी राजा यह कार्य नहीं कर सका था। निस्संदह अपने समय में रावण सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट था न केवल राजनीतिक रूप से वरन सांस्कृतिक दृष्टि से भी रावण बहुत महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली व्यक्ति था। राक्षस धर्म और संस्कृति का प्रथम व्याख्याता, स्थापक और निवारक भी रावण ही था। उस ने आदित्य (यानी–सूर्य) संस्कृति और क्षस (यक्ष) संस्कृति का समन्वय कर के राक्षस संस्कृति की स्थापना की। उस समय भारतीय आर्यों की बहिष्कार नीति के कारण दक्षिणी भारत में बहिष्कृत आर्यों की अनेक जातियां बस गई थीं। रावण ने इन सब को अपनी राक्षस संस्कृति में दीक्षित कर लिया, रावण के वीरत्व से भयभीत हो कर अन्य धर्मावलंबियों ने भी रावण की आधीनता से साथ साथ उस की संस्कृति को भी ग्रहण कर लिया, इस प्रकार शीघ्र ही राक्षस संस्कृति तत्कालीन संस्कृतियों में सर्वप्रधान हो गई। राक्षस संस्कृति का मूलमंत्र था अखिल विश्व को एक धर्म और संस्कृति में दीक्षित करना। इस प्रकार रावण प्रथम व्यक्ति था जिस ने अखिल विश्व एकता का उद्घोष किया। इस उद्देश्य से सर्वप्रथम उसी ने वेद का संपादन, वैदिक ऋचाओं पर नवीन टिप्पणियां, मूलमंत्रों की व्याख्या और व्यवहार अध्याय में वृद्धि की। रावण द्वारा प्रतिपादित यह नवीन भाष्य ही आज 'कृष्ण यजुर्वेद' के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार सांस्कृतिक क्षेत्र में भी रावण की देन बहुमूल्य है। वास्तव में उस के महापंडित्य के संबंध में दो राय नहीं हो सकती।

प्रायः आर्य ऋषियों और रामकथा के रचयिताओं ने रावण पर परस्त्रीगामी, मांसहारी और यज्ञादि विरोधी होने के आरोप लगाए हैं, जब कि ये आरोप सर्वथा निर्मूल हैं और केवल आर्यों के एकांगी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। रावण ने अधिकांश स्त्रियों को अग्निदीक्षा के पश्चात ही प्राप्त किया था, विलासिका, प्रहष्टरोमा, कुमुदवती, प्रभावती, सुभद्रा, माधुरी, अमृतप्रभा, केशिनी, कालिंदी, भद्रिका, दर्पकमाला, सौदामिनी, उज्जवला, पीरवा, अंजनिका, केशरावती, मदनसेना, चंद्रवती, वरुणसेना, विद्युंमाला तथा प्रधान महिषी मंदोदरी आदि सभी रानियों ने रावण को स्वयं वरा था, अथवा इन के पिताओं ने स्वयं ये रावण को प्रदान की थीं।

सीताहरण उस ने अपनी बहन शूर्पणखा के अपमान का प्रतिशोध लेने के लिया किया था, सीताहरण वास्तव में उस के परस्त्रीगामी होने का नहीं, वरन् उस के श्रेष्ठ चरित्र और वीरत्व का परिचायक है. यदि वह चाहता तो क्या वह सीता का

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

बलात्कार, अपमान अथवा अंगभंग नहीं कर सकता था ? लेकिन सीता को महीनों अपने अधिकार में रखने पर भी उस ने सीता को कोई कष्ट नहीं दिया। इसी प्रकार मांसाहार जब आर्यों तक में था तो फिर रावण पर ही यह आरोप क्यों ? यज्ञादि विरोध भी वास्तव में यज्ञों का नहीं वरन आर्य यज्ञ प्रणाली का था। दूसरी ओर रावण स्वयं एक बहुत बड़ा याज्ञिक था और उस ने कोई भी महत कार्य बिना यज्ञ के नहीं किया। स्वयं राम और रामकथाकार भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

दूसरी ओर राम द्वारा बालि वध, सौमित्र द्वारा शूर्पणखा अपमान और मेघनाद वध, राम द्वारा सीता की अग्निपरीक्षा और उस मे सफल होने पर भी निष्कासन क्या राम के गुण माने जाएंगे ? (रामभक्त क्षमा करें) यह सत्य है कि राम ने रावण का वध किया, लेकिन क्या विभिषण और सुषेण जैसे घर के भेदियों के बिना यह संभव था? विभीषण की शरणागति वास्तव में राम की कूटनीतिक विजय थी, जिस ने रावण की पराजय में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य किया। इस प्रकार रावण का वध राम ने केवल सत्य के आधार पर नहीं वरन साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी राजनीतिक और कूटनीतिक चालों का प्रयोग कर के किया था। वास्तव में, राम और रावण कि किसी भी दृष्टि से तुलना करने पर सिद्ध हो जाता है कि इन में रावण ही अधिक आदर्श था, स्वयं राम तक उस की वीरता, विद्वत्ता और अतुलनीय नीति ज्ञान के प्रशंसक थे।

प्रायः विजयादशमी अथवा दशहरे का संबंध रावणवध से जोड़ा जाता है। लेकिन गणना द्वारा यह बात असंगत सिद्ध होती है। भारतीय गणना के अनुसार दशहरा आश्विन मास की दशमी के दिन मनाया जाता है जब कि रावणवध वैशाख कृष्णा चतुर्दशी या चैत्र कृष्णा अमावस्या को हुआ था। वाल्मीकि ने सीताहरण और रामविलाप वर्षा ऋतु मे माना है, वर्ष के पश्चात आश्विन में सीता की खोज प्रारंभ हुई, दो मास खोज में लगे। माघ में सैन्यदल चला और एक मास में समुद्र पार किया, इस प्रकार युद्ध चैत्र बैशाख में हुआ जो 84 दिन चला। अतएव गणना से सिद्ध होता है कि दशहरे और रावणवध में बहुत समय का अंतर है।

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि रावण महान पंडित था, रामकथाकारों ने उस का जो असंगत चित्रण किया है वह केवल आर्य अनार्य के पारस्परिक भेदभावों और मनोमालिन्य के कारण किया है। अन्यथा रावण जैसा पराक्रमी, तेजस्वी और महाज्ञानी उस युग में दूसरा नहीं था।

साभार : कितने खरे आदर्श हमारे ?
सं. : राकेश नाथ

विद्युत चुम्बकीय शक्ति की खोज

माइकेल फैराडे को पतंग उड़ाते समय विद्युत चुम्बक की अनुभूति हुई। माईकेल फैराडे (1791-1867) तथा जोसेफ हेनरी (1797-1878) ने मिलकर विस्तृत चुम्बकीय क्षेत्र का पता लगाया : नमनीय लोहे के चारों ओर तारों को लपेट कर सम कुंडल बनाकर उसमें विद्युत धारा प्रवाहित करने से चुम्बकीय क्षेत्र बढ़ जाता है। तारों के कुंडल में विद्युत धारा के संयुक्तिकरण को ही विद्युत चुम्बक कहते हैं। विद्युत करणो में दो प्रकार की विद्युत धारा पायी गई–धन विद्युत धारा तथा ऋण विद्युत धारा। एक प्रकार के विद्युत कण अर्थात धन धन या ऋण ऋण कण एक दूसरे से दूर भागते हैं और विरोधी विद्युत कण एक दूसरे को आकर्षित करते हैं।

डाल्टन के आरणविक सिद्धान्त के अनुसार पदार्थ का सबसे छोटा कण अणु था। डाल्टन महोदय के अनुसार अणु अविभक्त एवम् अखंडनीय था। परन्तु विद्युत चुम्बकीय शक्ति की गयी खोज के पश्चात् अणु की अखण्डता टूट गई। यह कल्पना की गई कि अणु दो परमाणु से बना है। प्रथम धन विधा (विद्युत धारा) वाले प्रोटान तथा द्वितीय ऋण विधा वाले इलेक्ट्रान विरोधी विधा वाले कण प्रोटान व इलेक्ट्रान एक दूसरे को उस शक्ति से आकर्षित करते हैं जो उनकी विधा से अनुपात में है। प्रोटान तथा इलेक्ट्रान के बीच में शून्य स्थान होता है जो विद्युत आकर्षण शक्ति का क्षेत्र है। यह शक्ति ही अणुबंधन का आधार है तथा विश्व के जीवन में व्याप्त है। यह शक्ति प्रकाश की तरंग, रेडियो तरंग तथा एक्स किरण के रूप में दिखाई देती है। मैक्सवेल ने कहा कि विद्युत चुम्बकीय शक्ति का वाहक विद्युत चुम्बकीय विकिरण है जिसकी, दर्शनीय प्रकाश के मुकाबले में, दिशा सूचक लम्बाई बहुत अधिक है पर विस्तार बहुत कम है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति के समान विचुश का क्षेत्र बहुत लम्बा है।

विद्युत चुम्बकीय विकिरण तथा प्रकाश विकिरण में बड़ी भारी समानता है और उसकी प्रकाश के वेग से समता की जाती है। इस कारण प्रकाश सम्बन्धी जानकारी महत्वपूर्ण है।

न्यूटन के प्रकाश के बारे में कहा कि वह लघुतम कणों का बना है। उन कणों को कार्पसल्स कहते हैं। न्यूटन के समकालीन किश्चियन हाईगींस ने प्रकाश के सम्बन्ध में कहा कि ''प्रकाश तरंग का बना है।'' फैराडे ने प्रकाश के सम्बन्ध में कहा कि प्रकाश ऊर्जा का स्त्रोत है जो अपने उद्‌गम स्थान (सूर्य) से प्रवाहित होता है जिसमें विद्युत चुम्बकीय शक्ति होती है। उस समय वैज्ञानिकों में अन्तरिक्ष में सर्वग्राही पदार्थ ईथर की कल्पना की, जिसकी प्रकाश ऊर्जा का माध्यम माना जाता था तथा फैराडे व मैक्सवेल के अनुसार ईथर विद्युत चुम्बकीय गति की यांत्रिक गति में परिगत कर देता है।

वैज्ञानिक थामस यंग ने सन् 1801 ई० में प्रकाश की 1–विचुश=विद्युत चुम्बकीय शक्ति किरणों का तरंग में चलने का जोरदार प्रदर्शन कर न्यूटन के प्रकाश के कार्पसल्स के सिद्धान्त की मान्यता समाप्त कर दी । फैराडे की कल्पना को, उसके शिष्ट जेम्स क्लर्क मैक्सवेल ने गणितीय तर्क के आधार पर यह प्रदर्शित कर, साकार कर दिया कि विद्युत चुम्बकीय शक्ति कंपन तरंग में चलती है। प्रकाश की तरंग ही विद्युत चुम्बकीय तरंग है जिसक वेग 186000 मील प्रति सेकंड है।

तरंग सिद्धान्त के अनुसार मैक्सवेल ने बताया कि तरंग की वेग वृद्धि = E/c है जबकि E ऊर्जा और c प्रकाश की गति है। पदार्थ की वेग वृद्धि mc है। E/c = mc अतः E = mc2 मैक्सवेल ने यह सिद्ध कर दिया कि विद्युत चुम्बकीय अन्तरक्रियायें एक सीमित वेग (प्रकाश का वेग c = 300000km/sec) से प्रसारित होती है। इसका अर्थ यह है कि यदि हम A विधा को थोड़ा सा संचालित करते हैं तो वह शक्ति जो B विधा पर कार्य कर रही है वह तत्काल कार्य नहीं करेगी। मैक्सवेल के सिद्धान्त यह आधारभूत तथ्य है कि विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र में एक अजीब प्रकार की जड़ता होती है।

इस विवेचन में भी गतिमान संहति एवम् स्थिर संहति के अन्तर की स्पष्ट झलक पायी जाती है। इन खोजों के कारण विश्व में विद्युतगति (Dynamics) एवम् विद्युत कल–कारखानों का युग आरंभ हो गया।

साभार :
शिक्षा के अहिंसक क्रांति
पेज संख्या XVI से XVIII तक
मूलचन्द्र विद्यार्थी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

ब्राह्मणों ने हिन्दू देवताओं को एक दूसरे से क्यों लड़ाया ?

विश्व के सबंध में हिंदुओं का तत्वज्ञान त्रिमूर्ति पर आधारित है। उनके अनुसार विश्व की तीन स्थितियां हैं। सृष्टि, पालन और संहार। यह एक अविरल क्रम है। यह तीन कार्य ब्रह्मा, विष्णु और महेश द्वारा किये जाते हैं। ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना की। विष्णु इसका पालनहार हैं और महेश संहारक। ये देवता त्रिमूर्ति कहे जाते हैं। त्रिमूर्ति के सिद्धांत से परिलक्षित है कि तीनों का पद समान हैं। ऐसा कार्य सम्पन्न करते हैं, जो अन्योन्याश्रित है, उनमें कोई विरोध नहीं। वे परस्पर मित्र हैं, विरोधी नहीं। वे परस्पर सहायक है, शत्रु नहीं।

इन तीनों देवों के कार्यों का उल्लेख करने वाले साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि स्थिति बिल्कुल भिन्न है। कथनी और करनी में अंतर है। ये देव परस्पर मित्र होने के स्थान पर एक–दूसरे के शत्रु हैं, जो श्रेष्ठता और सत्ता के लिये एक–दूसरे से भिड़ जाते हैं। पुराणों के कुछ उदाहरण स्थिति स्पष्ट कर देंगे।,

एक समय था जब विष्णु और शिव की अपेक्षा ब्रह्मा परमदेव थे। ब्रह्मा को जगत नियंता बताया गया है अर्थात प्रथम प्रजापति। वे शिव के भी जनक हैं और विष्णु के भी स्वामी हैं। यदि विष्णु सृष्टि के पालक हैं तो इसका आदेश उन्हें ब्रह्मा से मिला है। ब्रह्मा का परम पद ऐसा पद है कि रुद्र और नारायण तथा कृष्ण और शिव के बीच विवाद पर निर्णय ब्रह्मा देते हैं।

इतना ही ध्रुव सत्य है कि कालांतर में ब्रह्मा का शिव और विष्णु से संघर्ष हुआ और आश्चर्य है कि अपने विरोधियों के समक्ष उन्हें अपनी श्रेष्ठता से हाथ धोना पड़ा। विष्णु के साथ उनके संघर्ष के दो उदाहरण है।

पहला अवतारों की कथा। अवतारों के विषय में ब्रह्मा और विष्णु के मध्य प्रतिद्वंदिता हैं। मानवता को आपदाओं से त्राण दिलाने हेतु अवतार सिद्धांत ब्रह्मा के अवतार से आरम्भ होता है। कहा जाता है कि उन्होंने दो अवतार लिये (1) वाराह और (2) मत्स्य। परंतु विष्णु भक्त यह मानने को तैयार नहीं। उनका कथन है कि ये अवतार ब्रह्मा ने नहीं लिये अपितु विष्णु ने लिये थे। उन्हें इन्हीं अवतारों से संतोष नहीं हुआ। उन्होंने कहा कि विष्णु ने और भी अवतार लिये थे। पुराणों में विष्णु के अवतार बताने की होड़ सी लग गई।

दूसरी कथा सर्वप्रथम जन्म धारण करने की है। इसका उल्लेख स्कंदपुराण में है। कथा इस प्रकार है कि एक बार विष्णु देवी के वक्ष स्थल पर सो रहे थे। उनकी नाभि से एक कमल प्रकट हुआ और यह पुष्प जल की सतह पर आ गया। उसमें ब्रह्मा प्रकट हुये। उन्होंने जब यह देखा कि इस अनंत में कोई जीव नहीं है तो उन्होंने सोचा सर्वप्रथम वे ही उत्पन्न हुये हैं और इस प्रकार उन्होंने अपने को भावी सृष्टि से पूर्व जन्मा बताया। फिर भी यह निश्चय करने के लिये कि उनकी प्रमुखता को चुनौती कौन दे सकता है ? उन्होंने कमल नाल को खींचा तो विष्णु को सोता हुआ पाया। उन्होंने जोर से पूछा ''यह कौन है ?'' विष्णु ने कहा मैं सबसे पहले जन्मा हूँ, और जब ब्रह्मा ने अपने को पूर्व जन्मा बताया तो दोनों में युद्ध छिड़ गया। तभी महेश प्रकट हुये और कहा, पहले मेरा जन्म हुआ है। परन्तु मैं तुम दोनों में से किसी के लिये भी यह स्थिति त्यागने के लिये तैयार हूँ यदि तुममें से कोई मेरी शिखा तक अथवा मेरे पांवों के तलवे तक पहुंच जायें। ब्रह्मा तुरन्त तैयार हो गये किन्तु वे थक गये थे पर बिना बात की बात पर अनिच्छुक हो गये इसलिये उन्होंने अपना दावा त्याग दिया। वे महादेव की ओर मुड़े और कहा। उन्होंने बात पूरी कर दी है और उनके माथे का मुकुट देख लिया है और साक्षी के लिये प्रथम जन्मी गाय को बुला लिया। इस दर्प और झूठ पर शिव को क्रोध आ गया और उन्होंने कहा कि ब्रह्मा की कोई पूजा नहीं होगी और गाय का मुख विकृत हो जायेगा। फिर विष्णु आये और उन्होंने यह स्वीकार किया कि वे शिव के चरण नहीं देख पायें तब उन्होंने उनसे कहा कि देवों में वही प्रथम जन्में हैं और उनका पद सर्वोच्च है। इसके पश्चात शिव ने ब्रह्मा का पांचवां मुख काट डाला और उनका मौन भंग हुआ। उनकी शक्ति और प्रभाव क्षीण हो गये।

इस कथा के अनुसार ब्रह्मा का यह दावा झूठा था कि उनका जन्म सर्वप्रथम हुआ हैं। इसके लिये वह शिव के दण्ड के भागी बने। विष्णु को प्रथम जन्मा कहलाने का अधिकार मिला। ब्रह्मा के अनुयाइयों ने शिव की सहायता से विष्णु द्वारा ब्रह्मा का स्थान छीन लेने पर बदला लेने की ठानी। इसलिये उन्होंने एक और कथा रच डाली, जिसके अनुसार विष्णु ब्रह्मा के नथुनों से सूकर रूप में उत्पन्न हुये और स्वाभाविक रूप से वाराह बन गये – विष्णु के वाराह अवतार का यह बहुत तुच्छ विश्लेषण है।

इसके पश्चात ब्रह्मा ने शिव–विष्णु के बीच शत्रुता उत्पन्न कराने की चेष्टा की। स्वाभाविक है कि अपनी स्थिति बेहतर बनाने के लिये यह चेष्टा की होगी। यह कथा रामायण में कही गई है। वह इस प्रकार है–

जब राजा दशरथ, मिथिलापति जनक, जिसकी पुत्री से राम का विवाह हुआ था, से विदा लेकर अपने राज्य को लौट रहे थे तो उनके समक्ष अपशकुन हुये, उनके चारों ओर भयंकर स्वर वाले पक्षी चीख उठे और भूमि पर चलने वाले मृग उनके दाहिनी ओर चलने लगे। यह देखकर दशरथ ने वशिष्ठ से पूछा, पक्षी चीख रहे हैं और मृग दाहिनी ओर चल रहे हैं, यह शकुन शुभ भी है और अशुभ भी है। यह क्या बात है ? इससे मेरा हृदय शंका से भर उठा है। तब वशिष्ठ बोले यह परशुराम के आगमन की चेतावनी है तो तूफान की तरह चले आ रहे हैं जिससे पृथ्वी कांप उठी है, पेड़–पौधे गिरने लगे हैं और गहन अंधकार छा गया है। धूल से सूरज ढक गया है। परशुराम सामने से आ रहे हैं, बड़े भयानक दिखाई दे रहे हैं, कंधे पर फरसा और धनुष–बाण है। दशरथ ने उनका सम्मानपूर्वक अभिवादन किया, जिसे परशुराम ने स्वीकार कर लिया और दशरथ पुत्र राम की ओर बढ़े। कहा कि राम तुम्हारा बहुत पराक्रम सुना है। जनक द्वारा दिया गया शिव धनुष भी तुमने तोड़ दिया है। मैं दूसरा धनुष लेकर आया हूँ। इसे खींचकर बाण चढ़ाओं। बाण चढ़ाने से तुम्हारे बल का अनुमान लगाकर मैं तुम्हारे साथ द्वंद्व करूंगा। परशुराम का वचन सुनकर दशरथ की हवाइयां उड़ गईं। परन्तु उन्होंने परशुराम से दीनभाव से ही बातचीत की। परशुराम ने फिर राम से ही कहा कि जो धनुष तुमने तोड़ा है, वह शिव का धनुष था किंतु अब जो धनुष मै लाया हूँ वह विष्णु का है। ये दोनों धनुष विश्वकर्मा ने बनाये थे, जिनमें से एक महादेव को दिया गया और दूसर विष्णु को।

इसके आगे का वर्णन इस प्रकार है :

तब देवताओं ने ब्रह्मा से आग्रह किया कि नीलकंठ (महादेव) और विष्णु के गुणावगुण का पता लगायें। परम श्रेष्ठ ब्रह्मा ने दोनों के बीच वैमनस्य के आशय को जान लिया। इस स्थिति में नीलकंठ और विष्णु के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। दोनों ही एक दूसरे को पराजित करना चाहते थे। शिव जी के विकराल धनुष में शिथिलता आ गई और त्रिनेत्र शिव जाप करने लगे। दोनों महान देवों के देवता समूह, ऋषियों और चारणों ने अर्चना की और वे शांत हो गये। जब देवताओं ने यह देखा कि विष्णु के तेज के आगे शिव धनुष शिथिल पड़ गया तो देवताओं ने विष्णु की श्रेष्ठता मान ली।

इस प्रकार ब्रह्मा ने महादेव द्वारा अपने प्रति किये गये अन्याय का बदला ले लिया।

इस प्रपंच से भी ब्रह्मा विष्णु पर श्रेष्ठता न पा सके। ब्रह्मा का इतना पराभव हुआ कि जो कभी विष्णु को आदेश देते थे, वही ब्रह्मा का सृष्टा कहलाया।

शिव के साथ हुये श्रेष्ठता–संघर्ष में भी ब्रह्मा की वैसी ही गत बनी, इस संदर्भ में भी स्थिति ठीक विपरीत हो गयी। कहां तो शिव ब्रह्मा से उत्पन्न हुये और कहां अब शिव ब्रह्मा के सृष्टा बन गये। ब्रह्मा मुक्ति के कारण नहीं रहे। वह देवता, जो मोक्ष प्रदान कर सकते थे, शिव थे और मुक्ति पाने के लिये ब्रह्मा की हैसियत शिव और उनके लिंग की एक साधारण भक्त की तरह करने की हो गई, वह शिव के सेवक हो गये और उनके सारथी बने।

अंततोगत्वा, अपनी पुत्री के साथ व्यभिचार करने के आरोप के कारण ब्रह्मा पूज्नीय नहीं रहे। भागवत पुराण में इस लांछन का उल्लेख इस प्रकार है –

'' हे क्षत्रिय! हमनें सुना है कि स्वायंभुव के मन में अपनी अबला और मोहक पुत्री वाच के प्रति कामुकता जगी, जिसके मन में उनके प्रति कामभाव नहीं था। ऋषियों, और मरीचि के नेतृत्व में अपने पिता के कुकर्म पर उनके पुत्रों ने उन्हें फटकारा। तुमने ऐसा कुकर्म किया है, जो तुमसे पहले किसी ने नहीं किया। न तुम्हारेबाद कोई ऐसा करेगा। क्या तुम्हें विधाता होते हुये अपनी पुत्री से ही विषयभोग करना था ? क्या तुम अपने उन्माद को रोक नहीं सकते थे ? अरे विश्व के गुरु तुम्हारे जैसे गौरवशाली व्यकित के लिये यह प्रशंसनीय नहीं है। जिनके कार्यों की मर्यादा के कारण व्यक्ति को आनन्द प्राप्त होता है जो जिस विष्णु की महिमा की दीप्ति से यह ब्रह्मांड प्रकाशित होता है, लौ उसी से फूटती है। उसे विष्णु धर्म परायणता को बनाये रखना चाहिये, अपने पुत्रों के व्यवहार को देखकर, जो प्रजापतियों के स्वामी से ऐसा कह रहे थे, प्रजापति शर्म से गड़ गये और अपने शरीर का विखंडन कर दिया। उसके भयानक अवशेष उस क्षेत्र में फैल गये और वही कोहरे के नाम से विख्यात हुआ।''

ब्रह्मा के विरुद्ध ऐसा अपकर्ष एवं अपमानजनक प्रहार होने से वह चारों खाने चित्त हो गये। इसमें कोई आश्चर्य नहीं। भारत से उनकी उपासना लुप्त हो गई और त्रिमूर्ति में औपचारिक रूप से ही सहभागी रह गये।

ब्रह्मा के मैदान से बाहर होने पर रह गये शिव और विष्णु। ये दोनों भी कभी चैन से नहीं बैठ पाये।

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।

दोनों के बीच होड़ और खींचतान जारी रही।

शिव और विष्णु उपासकों में पुराणों के माध्यम से वर मांगा कि त्रिलोक में उपस्थित कोई प्राणी उसके प्राण नहीं ले सके। विष्णु मान गये। परन्तु वह इतना ढीठ हो गया कि जब उसने देवताओं का त्रास दिया तो उन्होंने उसके समक्ष समर्पण कर दिया और वह विश्व का शासक बन बैठा। असुर के अत्याचारों से लाचार विष्णु काली कट पर चिंतित बैठे थे। उनका रोष स्पष्ट दिख रहा था। उनकी आंखों के सामने इस आकार का जीव प्रकट हुआ, जो पहले त्रिलोक में विद्यमान नहीं था। वह रौद्ररूपी महादेव थे जिन्होंने क्षण भर में विष्णु को त्राण दिलाया।

इसके प्रतिरोध मे भस्मासुर की कथा प्रचलित हुई कि शिव औघड़ (मूर्ख) हैं और विष्णु ने उनकी करतूत से उन्हें बचाया। भस्मासुर ने शिव को एक वरदान पाने के लिये प्रसन्न कर लिया। वरदान यह था कि भस्मासुर जिसके भी सिर पर हाथ फिरायेगा, वह भस्म हो जायेगा। शिव ने वरदान दे दिया। भस्मासुर ने शिव के वरदान से उन्हें ही भस्म करने की ठानी। शिव सिर पर पांव धरकर भागे और विष्णु के पास पहुंचे। विष्णु ने मोहिनी रूप धारण किया और भस्मासुर के पास गये। वह उन्हें देखकर आसक्त हो गया। मोहिनी रूपी विष्णु ने कहा कि वह एक शर्त पर उनकी हो जायेगी कि जैसे जैसे वह करे वैसे ही भस्मासुर करे, विष्णु ने इस प्रकार भस्मासुर का हाथ उसके सिर पर रखवा दिया। परिणाम यह निकला कि भस्मासुर का काम तमाम हो गया और विष्णु को यह श्रेय मिला कि उन्होंने शिव को उनकी मूर्खता के कारण संभावित विनाश से बचा लिया।

क्या ईश (महादेव) किसी अन्य दृष्टि से भी कार्यों का कारण है ? हमने यह नहीं सुना है किसी व्यक्ति के लिंग की दूसरे व्यक्ति और देवता पूजा करें। आप बतायें कि क्या आपने कहीं सुना है कि शिव के सिवाय किसी अन्य के लिंग की पूजा की जाती हैं अथवा पहले भी कभी देवताओं ने की है। जिसके लिंग की ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र देवताओं सहित निरंतर पूजा करते हैं। इस प्रकार शिव सर्वोच्च है। जातकों में न तो कमल–चिह्न (ब्रह्मा का) न ही चक्र (विष्णु का) और न ही वज्र (इन्द्र का) होता है बल्कि उनमें स्त्री पुरूष के अंग होते हैं। इस प्रकार सारी संतानों का दाता महेश्वर है। सभी नारियां देव से उत्पन्न हैं, उनमें नारी के अंग हैं और पुरूषों में शिवलिंग विद्यमान रहता है। चराचर में से एक भी ढूढ़ दो। सब जान लीजिये जो पुरूष हैं वे ईश हैं जो नारी हैं, वे उमा हैं। इस प्रकार सारा चराचर विश्व इन दो में से निकला है।

, यूनानी दार्शनिक जैनोफेन्स इस बात पर बल देते हैं कि बहुदेववाद अमान्य है और इसमें विरोधाभास है। इसलिये एकेश्वरवाद ही सत्य है। दार्शनिक कसौटी पर परखने से जैनोफेन्स का विचार सही हो सकता है। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टिकोण से दोनों स्वाभाविक है। जहां एक ही सम्प्रदाय का समाज है वहां बहुदेववाद स्वाभाविक और आवश्यक है। क्योंकि प्रत्येक प्राचीन सम्प्रदाय में न केवल भिन्न व्यक्ति होते हैं बल्कि उनके विविध भगवान भी होते हैं। विभिन्न समुदायों का विलय और समुदाय सिवा इसके संभव नहीं कि उनके भगवान को दूसरे भी स्वीकार करें। इस प्रकार बहुदेववाद पनपा।

निष्कर्ष निकलता है कि हिंदुओं में अनेक भगवान का अस्तित्व ठीक है क्योंकि हिंदू समाज अनेक कबीलों–सम्प्रदाओं का जमघट है जिनके अलग–अलग देवता हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि ये देवता आपस में संघर्षरत परस्पर दोषारोपण और वंदना में निरत रहे। यह सब कुछ लज्जा और क्षुद्रता की बात है। इसका स्पष्टीकरण वांछित हैं।

साभार : दसवी पहेली, बाबा साहब डा. अम्बेडकर, सम्पूर्ण वाड्मय खण्ड 8, पृष्ठ सं. 80 से 88 तक

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

ज्वलंत समस्याएँ

चमार शासक कौम है, तर्कशील है, परिश्रमी है, उद्यमी है और जुझारू है, लेकिन वर्णाश्रम व्यवस्था में सबसे नीचे के पायदान पर होने के कारण वह सदियों से दमन का शिकार है, इसलिए बौद्धिक और शारीरिक बल में कमी आ गई है। हालांकि दुनिया में होने वाले परिवर्तनों से वह भी अप्रभावित नहीं है और अंधकार में प्रकाश की ओर उन्मुख है।

सन् 1989 में सोवियत संघ के विघटन के बाद समाजवाद का किला ध्वस्त हो गया और पूंजीवाद की पताका सारे विश्व में फहरा रही है। उसका अगुवा बनकर अमेरिका एकमात्र दरोगा बना हुआ है। वह और उसके घनिष्ट सहयोगी के रूप में यूरोपिन यूनियन में शामिल विकसित राष्ट्र अपना आर्थिक साम्राज्य विकासशील राष्ट्रों पर थोपने के निरन्तर प्रयत्नशील है। वे अपनी किसी न किसी विवशता के कारण पूंजीवादी देशों द्वारा निर्धारित आर्थिक नीतियाँ अपने यहाँ भी अपनाने के लिए विवश हैं। विकसित राष्ट्रों का शीर्ष नेतृत्व अपने देश के हितों को तो जरा भी ठेस नहीं पहुँचने देते, लेकिन दूसरों की उसे कोई परवाह नहीं और विकासशील देशों को अपने जाल में फांसने में कोई कसर नहीं छोड़ते। भारत भी अब पूंजीवादी नीति की ओर अग्रसर हो रहा है, जिससे आर्थिक असमानता बढ़ती जा रही है।

वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के चलते सार्वजनिक उद्योगों एवं शिक्षा के निजीकरण की नीति को बढ़ावा देने से अनुसूचित जाति/जनजाति वर्गों के विकास का पहिया रूक गया है, जो थोड़ी–सी बराबरी और खुशहाली का अहसास उसे होने लगा था, वह फिर डगमगा गया है। इन वर्गों में सबसे बड़ी जनसंख्या वाली कौम चमार अपने आप को फिर पहले की तरह समस्याओं से घिरा पा रही है। जिन लोगों ने गरीबी झेलते हुए बड़ी मुश्किल से अपने बच्चों को पढ़ाया–लिखाया, उनके लिए शिक्षा बेमानी हो गई है। इस समय ज्वलंत समस्याएं निम्नलिखित है–

उत्पीड़न –

वैसे तो सामन्ती मानसिकता और जातीय दंभ से ओत–प्रोत दंबग उच्च जातियों के ऊँची नाक वाले लोग अपने यहाँ काम करने वाले मजदूरों तथा नीच समझी जाने वाली जाती के लोगों पर समय–समय पर अत्याचार करते ही रहते हैं, लेकिन जिन्होंने इसे नियति मान लिया है, वे विरोध नहीं करते, इसकी चर्चा गली–मुहल्लों तक ही सीमित रहकर अपने आप कुछ समय बाद समाप्त हो जाती है। लेकिन चमार जो विरोध करते हैं, गलत बात का जवाब देते हैं और जहाँ तक संभव होता है, मरने मारने पर उतारू भी हो जाते हैं, उसके इस मनोबल को तोड़ने के लिए उत्पीड़न की घटनाएँ दूसरों के मुकाबले ज्यादा होती हैं और पुलिस–प्रशासन भी उनका साथ नहीं दे पाता, क्योंकि उनकी हमदर्दी भी वर्गीय सम्बन्धों के कारण उत्पीड़कों के साथ ही होती है। अपने ही जैसे हाड़–मांस के आदमी को जिन्दा जलाना कितना वीभत्स है, कितना क्रूर है, दूसरों की बहन–बेटी की इज्जत से खेलना कितना शर्मनाक है। मजदूर को उसकी मजदूरी के बदले मारना–पीटना कहां का न्याय है? लेकिन उत्पीड़न का यह सिलसिला रूकने का नाम नहीं ले रहा है। उस पर विराम कौन लाएगा, कैसे लगेगा?

मुसलमान का गांव में एक घर भी होता है, उसे कोई छेड़ने की हिम्मत नही करता, क्योंकि उसकी हमदर्दी के सारे क्षेत्र में ही नहीं, पूरे देश के मुसलमान भाई खड़े नजर आते हैं। दूसरी तरफ चमार के 100 घर भी होंगे, उनका उत्पीड़न करने में किसी प्रकार का डर नहीं लगता है। उन्हें पता है कि पीड़ित के खानदान के भी सारे लोग उसके साथ खड़े नहीं होंगे। इस स्थिति में सुधार करना होगा, और दूसरों से भी सीखना होगा अन्यथा यह समस्या यथावत बनी रहेगी, आँसू तथा कराहट घर की चारदीवारी की हद पार नहीं कर पाएगी।

डरने की जरूरत नहीं है, कल कि रोजी–रोटी के लिए उन्हीं लोगों के पास जाना है, बुरा बनने का डर है, तो बोलने–चिल्लाने की भी सबको जरूरत नहीं है, बस केवल बिरादरीके दस–पांच गांवों के हजार–पांस सौर लोगों को उसके घर पर हमदर्दी के लिए इकट्ठा होने से ही बात बन सकती है। यदि वहाँ भी दबाव न बने, तो थाना–कचहरी में एक बार थोड़े से बदले तेवरों के साथ इकट्ठा जुटने का साहस करोगे, तो तुम्हारी बात प्रभावी ढंग से कहने वाला कोई न कोई नेता तो अपने आप मिल जाएगा। इतना जरूर ध्यान रखना है कि वह नेता आपके हितों के विपरीत सौदेबाजी न कर पाए। भीड़ के हुजूम को थाना–कचहरी कोई भी नजरअंजाद नहीं कर पाएगा।

घोर गरीबी

आंकड़े चाहे भारत को कितना भी आर्थिक रूप से मजबूत दिखाएँ, विकास दर भले ही 10 प्रतिशत से भी ऊपर चली जाए, लेकिन 40 प्रतिशत से अधिक आबादी का मूलभूत सुविधाओं से वंचित होना अपने आप में बहुत ही दुःखद पहलू है। अमीरों की संख्या बढ़ेगी तो गरीबों की संख्या भी बढ़ेगी, उस पर रोक लगाने वाली छड़ी किसी के पास नहीं है।

इस गरीबी से कोई वर्ग और जाति अछूते नहीं है। लेकिन चमार की स्थिति इसलिए बहुत खराब है कि वह सामाजिक और आर्थिक पाबंदियों से अभी भी ग्रस्त हैं। वह अपने परम्परागत व्यवसाय को तिलांजलि देकर दूसरे काम की ओर अग्रसर हुआ, तो दूसरों ने कहीं भी जमने नहीं दिया, कृषि कार्य में भी अब उसकी जरूरत नहीं। कोई काम करने का उसे न तो कोई अनुभव है और न ही उसके पास कोई पूंजी है। कोई दूसरा उसे सहारा एवं सहयोग नहीं देना चाहता।

काम–धंधों के बारे में सरकार की जितनी भी योजनाएं है, उनकी उसे जानकारी नहीं है। यदि इस भयंकर गरीबी से निकलने की समय रहते पहल नहीं की गई, तो भूख और बीमारी से दम तोड़ने वालों की संख्या बढ़ती ही जाएगी। इसलिए गांव के शिक्षित बेरोजगार लोगों को ग्राम स्तर पर स्वयं सहायता समूह बनाकर सहाकारिता के आधार पर कुटीर की शुरूआत करनी होगी। कोशिश करेंगे तो आगे का नेटवर्क भी सुलभ हो जाएगा।

बेरोजगारी–

कहने को तो सारी दुनिया में मंदी छाई है, भारत भी इससे अछूता नहीं है, यहां भी बेरोजगारी की संख्या बढ़ती जा रही है। सरकारी प्रयासों के बावजूद इस पर नियंत्रण पाना कठिन हो रहा है। बहुत बाद में यहाँ पर व्यवसायिक प्रशिक्षण की और रूझान बढ़ा है। फिर इस दिशा में जो योजनाएं चल रही हैं, वे देश की आबादी के हिसाब से ना काफी है। चमार बिरादरी के लोग इसमें भी पीछे हैं। ये नौकरी या मजदूरी के अलावा किसी भी काम को करने में शर्म महसूस करते हैं। गांव में जो काम संभव नहीं, उसके लिए शहर या बड़े कस्बे में कोशिश करनी चाहिए। सरकारी नौकरी या आर्थिक रूप से सम्पन्न लोग मिल–जुलकर व्यवसायिक प्रशिक्षण केन्द्र शुरू करें, तो रोजगार बढ़ने की गुंजाइश हो सकती है।

समर्पित नेतृत्व –

दूसरों के मुकाबले चमार बिरादरी के नेताओं के बारे में यह बात ज्यादा सुनने को मिलती है कि पार्षद, विधायक अथवा सांसद बनने के बाद वह अपने लोगों से मिलना–जुलना एकदम कम कर देता है, अन्य वर्गों के लोगों के साथ उसका बेहतर तालमेल होता है और उसके अधिकार क्षेत्र में जो कार्य अथवा योजनाएँ होती हैं, उनका लाभ भी गैर बिरादरी के लोगों को पहले और अधिक मात्रा में उपलब्ध कराता है, भले ही संख्या की दृष्टि से वे कम हों।

इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि वह जिस क्षेत्र का प्रतिनिधि है, सबकी तरफ ध्यान देना उसका दायित्व है, लेकिन बिरादरी के बहुसंख्यक लोगों को दरकिनार करना भी अच्छी बात नहीं। कई नेताओं की शिकायत यह रहती है कि अपने लोग उन्हें उचित सम्मान नहीं देते। यदि कहीं ऐसी बात है तो उसे भी सुधारना चाहिए।

वैसे तो आज के समय में राजनीति एक व्यवासाय बन गया है और छोटे–मोटे चुनाव में ही लाखों रूपये खर्च हो जाते हैं। इस प्रकार समाज के प्रति लगाव रखने वाले लोग इस क्षेत्र से ही बाहर हो जाते हैं, क्योंकि उनके पास इतना पैसा नहीं होता कि चुनाव आधुनिक तरीके से लड़ सके। फिर जो इस क्षेत्र में आता है तो वह कमाने के लिए ही आता है, इसलिए वह पहने अपना पेट भरने की सोचता है और अगले चुनाव के लिए भी बन्दोबस्त करना चाहता है, लेकिन जिन बाबा साहब ने जन–प्रतिनिधि में आरक्षण की व्यवस्था को विधि–सम्मत बनाया है, उनकी *Pay Back to society* वाली नसीहत को भी ध्यान रखना चाहिए और समाज को गरीबों की बेहतरी के लिए प्राथमिकता के आधार पर काम करना चाहिए तथा बीच–बीच में मिलने–जुलने की प्रक्रिया से भी अपने लोगों का हौंसला बढ़ता है।

आस्थागत विचलन–

अभी भी यह सच्चाई है कि चमार कौम के अधिकतर लोग हिन्दूधर्म से ही जुड़े हैं और हिन्दुओं के सभी परम्परागत त्योहारों को बड़े उत्साह से मनाते हैं। जहाँ तक दैनिक पूजा–अर्चना की बात है, हमें नहीं लगता कि सभी लोग विधिवत तरीके से करते हैं। भारत में ब्रिटिश राज्य के दौरान बहुत से लोगों ने ईसाई धर्म को ग्रहण किया, और उससे कहीं–कहीं उन्हें बाहर विदेशों में नौकरी करने के अवसर मिले, लेकिन वे यहाँ से कट गए। इसके अलावा छिटपुट रूप से मुसलमान तथा सिक्ख भी बने और बौद्ध भी बने। लेकिन उनके प्रति घृणा में कोई कमी नहीं आई, दूसरे लोग उन्हें चमार ही समझते रहे और उनकी सामाजिक हैसियत में कोई इजाफा नहीं हुआ। वैसे तो धर्म व्यक्ति का निजी मामला है, डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म अपनाने की जो मुहिम चलाई, उनकी अपेक्षा के अनुसार भारत के बौद्धों की संख्या नहीं बढ़ी।

इसका दूसरा पहलू यह भी है कि बौद्ध धर्म अपनाने वाले बहुत से भाई अपने हिन्दुवादी विचारों से पूर्णतया मुक्त नहीं हो पाए। इस संबंध में हम किसी को राय देना अनाधिकार चेष्टा समझते हैं, लेकिन हिन्दू धर्म की जो रूढ़ियाँ, संस्कार, कर्मकांड एवं अंधविश्वास हमारी प्रगति की राह में रोड़ा है, उन्हें तो जरूर ही तिलांजलि दे देनी चाहिए और गुरू रविदास जी एवं कबीरदास जी के उपदेशों से भी शिक्षा लेनी चाहिए। समाज के सत्संग में नाम की महिमा का अतिशयोक्ति पूर्ण गुणगान, सत्संग में बैठने से ही हजार वर्ष की तपस्या का फल मिलना और भगवान पर हद दर्जे की निर्भरता हमें निष्कर्मण्य बनाती है तथा श्रम का महत्ता पर पर्दा डालती है। बुद्धि और तर्क को महत्वहीन बनाती है। इस प्रकार के विचारों से उबरने से ही प्रगति का रास्ता खुलता है।

भगवान उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते है, पूर्ण निर्भरता से तो यह विचार भी बेहतर है। शिक्षित होने के बाद भी यह सोच कि ऊपर वाला जाने कुछ हजम नहीं होती। अपनी बुद्धि का इस्तेमाल किए बिना किसी बात को ज्यों–का–त्यों स्वीकार कर लेना तर्कशील चमार को शोभा नहीं देता। विचार ही नहीं आचरण में भी हमारे यहाँ स्थायित्व नहीं है। चूंकि हम किसी धर्म से गहराई तक नहीं जुड़े हैं, आचरण भी मर्जी के मुताबिक है, तो नियमबद्धता के बिना जीवन सुचारू रूप से नहीं चल पाता। सुव्यवस्थित दिनचर्या स्वस्थ ही नहीं बनाती, बल्कि कार्य क्षमता भी बढ़ाती है।

पारिवारिक विघटन–

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और दबायें।

पाश्चात्य प्रभाव से पूरा भारतीय समाज ही त्रस्त है और संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। माता–पिता के प्रति बाद सरकार की ओर से जो प्रयास किये गए, उसकी भी पहुँच सक्रिय रूप से बहुत नीचे तक नहीं हो पाई, क्योंकि जिनके हाथों में शिक्षा के विस्तार कार्यक्रमों के अनुपालन का उत्तरदायित्व है, वे इन्हे बराबरी में नहीं लाना चाहते।

वैसे दूसरों की देखादेखी थोड़ी–सी दूर की सूझबूझ रखने वाले बिरादरी के लोगों की तरफ से जो प्रयास हुए है, वे भी नाकाफी है, लेकिन विकास का पहिया चल जरूर पड़ा है और शिक्षा के निजीकरण से जिस प्रकार शिक्षा महंगी होती जा रही है, इससे विकास का रफ्तार फिर से कम होने की संभावना बन रही है इस कमी को पूरा करने के लिए चमार जाति के शिक्षित और सम्पन्न लोगों को सामूहिक प्रयास करने होंगे।

अंधविश्वास–

चमार जाति के लोगों में जो अंधविश्वास सदियों से चले आ रहे हैं, वे अभी भी बरकरार हैं। मानसिक दासता से उबरने में अभी वक्त लगेगा। भूत–प्रेत, जादू–टोना में विश्वास बराबर बना हुआ है। मृतक की अस्थियों को गया, हरिद्वार या इलाहाबाद गंगा में प्रवाहित करने की प्रथा कुछ स्थानों पर अभी चल रही है। और मृतक की मुक्ति के लिए बड़ा भोज दिया जाता है, चाहे पैसा कहीं से कर्ज में ही क्यों न उठाना पड़े। छठी व तेरहवीं तो अभी भी बड़े पैमाने पर प्रचलित हैं। वैसे शिक्षित समाज तो इस प्रकार के अंधविश्वासों से दूर होता जा रहा है, जो अच्छा लक्षण है, लेकिन 90 प्रतिशत से अधिक आबादी तो इस प्रकार के अंधविश्वासों में ग्रस्त है और खून–पसीने कमाई को व्यर्थ में बर्बाद कर रही है।

फिजूलखर्ची–

यह बहुत ही दुःखद पहल है कि जिन्हें कमरतोड़ मेहनत के बाद आधी अधूरी मजदूरी मिलती हैं, लेकिन वे दूसरों की देखादेखी शादी–विवाह, जन्म–मृत्यु, मेले–ठेलों तथा तीज–त्योहारों के अवसर पर दिल खोल कर खर्चा करते हैं, जिससे उन पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। यह निश्चित है कि उन्हें कर्ज पर जरूर पैसे उठाने पड़ते हैं और इनके लिए कर्ज की दरें भी महंगी होती है, उसे सूद सहित चुकाने में होने वाली परेशानियों को वह नजरअंदाज कर जाते है और इस कारण जीवन के दूसरे जरूरी काम अटक जाते हैं। आज जमाना बदल रहा है, तरक्की के नए–नए प्रतिमान विकसित हो रहे हैं, इसलिए चाहे जैसा भी अवसर हो, अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही खर्च करना चाहिए, दूसरे की नकल नहीं करनी चाहिए और अपने जैसी स्थिति वालों के साथ ही संबंध बनाना अधिक उचित होगा, जिससे अपने ऊपर अनाश्यक बोझ न पड़े।

आलस्य–

वैसे तो आलस्य और प्रमाद एक मानसिक वृत्ति है, लेकिन जीवन की बेहतरी के लिए इनका त्याग किया जाना जरूरी है। चमार जाति के लोगों में आलस्य दूसरों की अपेक्षा अधिक पैमाने पर देखा गया है। वह जहाँ तक होता है, काम से जी चुराने की कोशिश करता है।

निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि यदि अपनी ज्वलंत समस्याओं के समाधान के लिए सक्रिय पहल नहीं करेंगे, तो सबसे बड़ी संख्या वाली बिरादरी होने के बावजूद वो सम्मान और अधिकार प्राप्त नहीं होंगे, जो कम संख्या वाली दूसरी कौम के लोग संगठन के बल पर हासिल कर लेंगे।

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

साभार :
चमार जाति इतिहास और संस्कृति
पेज संख्या 109 से 117 तक
एस.एस.गौतम
डॉ.आर.एम.एस. विजयी

Youtube पर Dravid Bharat Channel को Subcribe करें और 🔔 दबायें।